NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 7-09-2024

विषय सूची

भारत-मध्य-पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा समुद्री सुरक्षा को प्रोत्साहन देगा

विश्वस्य-ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी स्टैक

2030 तक तकनीकी वस्त्र उद्योग 10 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा

प्लास्टिक प्रदूषण रैंकिंग में भारत शीर्ष पर

जल संचय जनभागीदारी पहल

संक्षिप्त समाचार

ला नीना में विलम्ब

कोन्याक जनजाति

बहुऔषधि प्रतिरोधी क्षय रोग के लिए BPaLM उपचार

FAO खाद्य मूल्य सूचकांक (FFPI)

विजियोएनएक्सटी (VisioNxt)

प्रकाश प्रदूषण से जुड़ा है अल्जाइमर का जोखिम

MSCI उभरते बाजार निवेश योग्य बाजार सूचकांक (EM IMI)

शनि के भव्य वलय

अभ्यास वरुण

फ्रीनाराचने डेसिपिएन्स

भारत-मध्य-पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा समुद्री सुरक्षा को प्रोत्साहन देगा

सन्दर्भ

- केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने कहा कि भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) भारत की समुद्री सुरक्षा और यूरोप तथा एशिया के बीच माल की तेज आवाजाही में योगदान दे सकता है।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)

- **प्रतिभागी:** दिल्ली G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत, अमेरिका, यूएई, सऊदी अरब, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।
- **उद्देश्य:** यह गलियारा एशिया, पश्चिम एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप के मध्य बेहतर संपर्क एवं आर्थिक एकीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगा और गति प्रदान करेगा।

घटक

- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा दो अलग-अलग गलियारों से मिलकर बनेगा,
  - पूर्वी गलियारा भारत को पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व से जोड़ता है और उत्तरी गलियारा पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व को यूरोप से जोड़ता है।
- इस परियोजना में संयुक्त अरब अमीरात तथा सऊदी अरब के माध्यम से अरब प्रायद्वीप में रेलवे लाइन का निर्माण और इस गलियारे के दोनों ओर भारत और यूरोप के लिए शिपिंग कनेक्टिविटी विकसित करना सम्मिलित होगा। पाइपलाइनों के माध्यम से ऊर्जा और ऑप्टिकल फाइबर लिंक के माध्यम से डेटा परिवहन के लिए गलियारे को अधिक विकसित किया जा सकता है।

बंदरगाह जो IMEC का भाग हैं

- **भारत:** मुंद्रा (गुजरात), कांडला (गुजरात) और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (नवी मुंबई) में बंदरगाह।
- **यूरोप:** ग्रीस में पिरियस, दक्षिणी इटली में मेसिना और फ्रांस में मार्सिले।
- **मध्य पूर्व:** बंदरगाहों में यूएई में फुजैरा, जेबेल अली और अबू धाबी, साथ ही सऊदी अरब में दम्मम तथा रास अल खैर बंदरगाह सम्मिलित हैं।
- **इज़राइल:** हाइफ़ा बंदरगाह।
- **रेलवे लाइन:** रेलवे लाइन यूएई में फुजैरा बंदरगाह को सऊदी अरब (घुवाइफ़त तथा हराद) और जॉर्डन से गुज़रते हुए इज़राइल में हाइफ़ा बंदरगाह से जोड़ेगी।

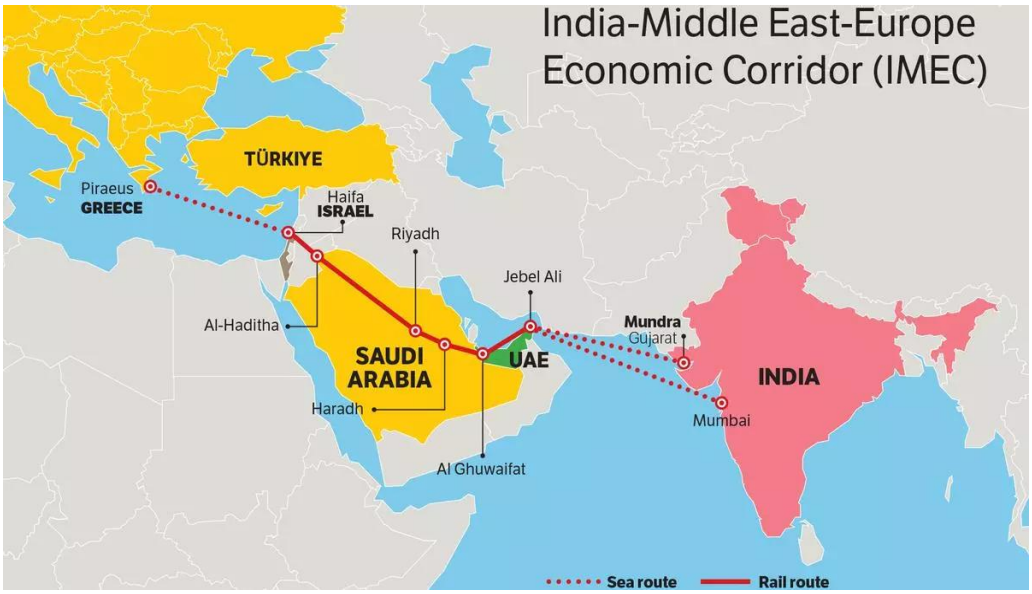

भारत के लिए समुद्री सुरक्षा

- IMEC महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर एक दृढ और सुरक्षित व्यापार गलियारा बनाता है। यह भारत को इन क्षेत्रों में गश्त तथा सुरक्षा में रणनीतिक भूमिका प्रदान करेगा।
    - भारत की भागीदारी से यह सुनिश्चित होता है कि अरब सागर और होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे उसके महत्वपूर्ण समुद्री अवरोध बिन्दुओं की सुरक्षा की जाए।
- गलियारे में स्थित देशों के बीच सहयोग से खुफिया जानकारी साझा करने और संयुक्त समुद्री अभ्यास में वृद्धि होगी।
    - इससे भारत को समुद्री डकैती, तस्करी और आतंकवाद जैसे समुद्री खतरों पर नजर रखने में सहायता मिलेगी, विशेष रूप से अदन की खाड़ी या लाल सागर जैसे अस्थिर क्षेत्रों में।
- जैसे-जैसे IMEC कनेक्टिविटी में सुधार करेगा, भारत के पास मध्य पूर्व और पूर्वी भूमध्य सागर के रणनीतिक बंदरगाहों में अपनी नौसैनिक उपस्थिति का विस्तार करने का अवसर होगा।
    - इससे भारत की शक्ति प्रक्षेपण क्षमता को बल मिलता है तथा इसके व्यापार मार्गों पर सुरक्षात्मक निगरानी सुनिश्चित होती है।
- IMEC भारत को यह सुनिश्चित करेगा कि रणनीतिक हिंद महासागर क्षेत्र पर चीनी निवेश का प्रभुत्व न हो, जिससे उसका समुद्री प्रभुत्व बना रहेगा और बाहरी खतरे कम होंगे।

भारत के लिए अन्य अवसर

- **पाकिस्तान को दरकिनार करना:** IMEC ने पश्चिम के साथ भारत के बुनियादी संपर्क पर पाकिस्तान के वीटो को समाप्त कर दिया। 1990 के दशक से, भारत ने पाकिस्तान के साथ विभिन्न अंतर-क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं की मांग की है।
    - लेकिन पाकिस्तान भारत को स्थल-आवरण वाले अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंच देने से मना कर रहा है।

- **मध्य पूर्व में भारत-अमेरिका सहयोग:** इस परियोजना ने इस मिथक को समाप्त कर दिया है कि भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका हिंद-प्रशांत क्षेत्र में तो मिलकर कार्य कर सकते हैं लेकिन मध्य पूर्व में नहीं।

IMEC के समक्ष बाधा

- इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष ने अरब-इजराइल संबंधों के सामान्यीकरण पर रोक लगा दी है, जो बहु-राष्ट्र पहल का एक प्रमुख तत्व है।
- **होर्मुज जलडमरूमध्य की भेद्यता:** IMEC वास्तुकला का पूरा व्यापार होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर बहता है और ईरान की जलडमरूमध्य पर निकटता तथा नियंत्रण के कारण व्यवधान का जोखिम बहुत अधिक रहता है।
- क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियों ने अन्य भागीदारों को परियोजना में निवेश करने के लिए अनिच्छुक बना दिया है।

आगे की राह

- भू-राजनीतिक चिंताओं को भागीदार देशों के भू-राजनीतिक हितों को समायोजित करने और संभावित राजनीतिक संवेदनशीलताओं को संबोधित करने में एक नाजुक संतुलन बनाकर प्रबंधित करने की आवश्यकता है।
- इस परियोजना के विश्व के कुछ अस्थिर क्षेत्रों से गुजरने के कारण आवश्यक सुरक्षा तंत्र को बनाए रखने की भी आवश्यकता है।

Source: AIR

विश्वस्य-ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी स्टैक

समाचार में

- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने विश्वस्य-ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी स्टैक लॉन्च किया।

ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी

- ब्लॉकचेन एक साझा, अपरिवर्तनीय खाता है जो लेन-देन रिकॉर्ड करता है और एक व्यावसायिक नेटवर्क में परिसंपत्तियों को ट्रैक करता है।
- लेन-देन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यह डिजिटल प्रारूप में इलेक्ट्रॉनिक रूप से जानकारी संग्रहीत करता है।
- इसे डिस्ट्रिब्यूटेड लेजर टेक्नोलॉजी (DLT) के रूप में जाना जाता है।
- यह मुद्रा सहित किसी भी मूल्यवान वस्तु को डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित और संग्रहीत करता है।

- **ऐतिहासिक संबंध:** इसे पहली बार 1991 में एक शोध परियोजना के रूप में प्रस्तावित किया गया था, लेकिन वर्ष 2009 में बिटकॉइन में ब्लॉकचेन का उपयोग किया गया था
  - बिटकॉइन एक क्रिप्टोकरेंसी है जो ब्लॉक टेक्नोलॉजी के आधार पर बनाई गई है।
- **संरचना और सुरक्षा:** इसमें परस्पर जुड़े हुए डेटा ब्लॉक होते हैं।
  - प्रत्येक ब्लॉक पिछले एक से जुड़ा हुआ है, जो एक श्रृंखला बनाता है।
  - ब्लॉकों को सुरक्षित और छेड़छाड़ या हैकिंग के प्रतिरोधी बनाया गया है।

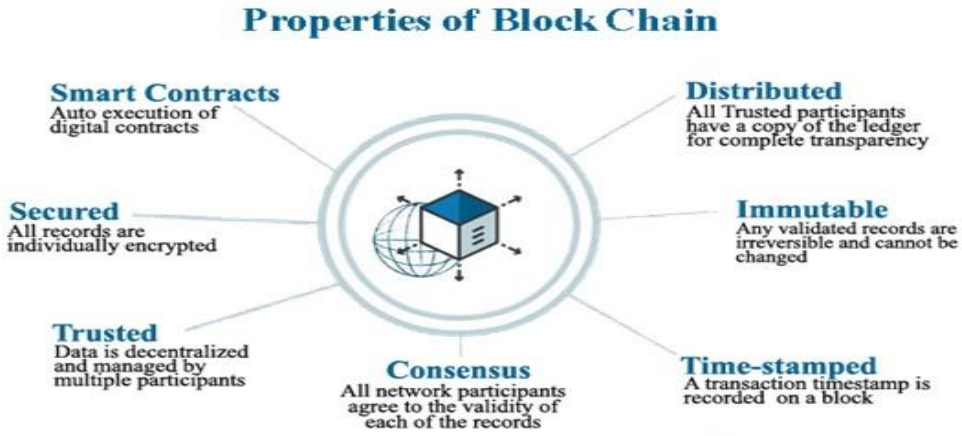

अनुप्रयोग

- **वित्त और बैंकिंग:** वित्तीय संस्थान व्यापार वित्त, विदेशी मुद्रा, सीमा पार भुगतान और प्रतिभूतियों के लिए ब्लॉकचेन का परीक्षण करते हैं।
  - भारत, अपनी बड़ी अंडरबैंक जनसँख्या के साथ, वित्तीय समावेशन के लिए ब्लॉकचेन का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
  - ब्लॉकचेन का उपयोग विभिन्न क्रिप्टोकरेंसी, विकेन्द्रीकृत वित्त अनुप्रयोगों, गैर-परिवर्तनीय टोकन और स्मार्ट अनुबंधों के निर्माण में किया गया है।
- **शासन और सार्वजनिक सेवाएँ:** शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए ब्लॉकचेन की क्षमता का सक्रिय रूप से पता लगाया जा रहा है। अनुप्रयोगों में भूमि रिकॉर्ड प्रबंधन, मतदान प्रणाली और पहचान सत्यापन सम्मिलित हैं।
- **स्वास्थ्य सेवा:** स्वास्थ्य सेवा में, ब्लॉकचेन का उपयोग रोगी रिकॉर्ड को सुरक्षित रूप से प्रबंधित करने, डेटा अखंडता सुनिश्चित करने और संस्थानों के बीच चिकित्सा जानकारी के सुरक्षित साझाकरण की सुविधा के लिए किया जा सकता है।
- **पारदर्शी चुनाव:** ब्लॉकचेन पारदर्शी और छेड़छाड़-प्रूफ मतदान रिकॉर्ड प्रदान करके चुनाव प्रक्रियाओं को बढ़ा सकता है।
- **आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन:** ब्लॉकचेन का उपयोग करके मूल से गंतव्य तक माल को ट्रैक करना अधिक विश्वसनीय हो जाता है।
  - भारत की विशाल आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ी हुई पारदर्शिता और पता लगाने की क्षमता से लाभ प्राप्त कर सकता है।

चुनौतियाँ और आलोचनाएँ:

- **जागरूकता का अभाव:** बढ़ती रुचि के बावजूद, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी भारत में अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है।
  - अभी भी कई उद्योग इसकी पूरी क्षमता को समझने में असमर्थ हैं।
- गलत धारणाएँ बनी हुई हैं, जैसे कि यह विश्वास कि ब्लॉकचेन वर्तमान प्रणालियों को पूरी तरह से परिवर्तित कर देगा।
- **स्केलेबिलिटी संबंधी चिंताएँ:** स्केलेबिलिटी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।
- **नियामक अनिश्चितता:** व्यापक रूप से अपनाने के लिए स्पष्ट नियामक दिशा-निर्देश आवश्यक हैं।
  - भारत प्रगति कर रहा है, लेकिन अधिक स्पष्टता की आवश्यकता है।
- **साइबर अपराध:** क्रिप्टो के बढ़ते प्रचलन के कारण घोटाले और साइबर अपराध में वृद्धि हुई है।
  - भारत के नए नियमों के कारण पीड़ितों के लिए हानि की पूर्ति करना और अधिकारियों के लिए क्रिप्टो-संबंधी अपराधों से प्रभावी ढंग से निपटना मुश्किल हो गया है।

हाल ही में उठाए गए कदम

- **विश्वस्य-ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी स्टैक:** यह भौगोलिक रूप से वितरित बुनियादी ढांचे के साथ ब्लॉकचेन-ए-ए-सर्विस प्रदान करता है, जिसे विभिन्न अनुमति प्राप्त ब्लॉकचेन आधारित अनुप्रयोगों का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क:** MeitY ने विश्वसनीय डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म बनाने की दृष्टि से, अनुसंधान और अनुप्रयोग विकास को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क (NBF) की शुरुआत की; नागरिकों को अत्याधुनिक, पारदर्शी, सुरक्षित तथा विश्वसनीय डिजिटल सेवा वितरण की सुविधा प्रदान की।
- MeitY ने NBFLite-लाइटवेट ब्लॉकचेन प्लेटफ़ॉर्म, प्रमाणिक - मोबाइल ऐप की उत्पत्ति और राष्ट्रीय ब्लॉकचेन पोर्टल को सत्यापित करने के लिए एक अभिनव ब्लॉकचेन-सक्षम समाधान का भी अनावरण किया।
- **स्टार्टअप और शिक्षाविदों के लिए ब्लॉकचेन सैंडबॉक्स:** NBFLite, एक ब्लॉकचेन सैंडबॉक्स प्लेटफ़ॉर्म है, जिसे विशेष रूप से स्टार्टअप/शिक्षाविदों के लिए अनुप्रयोगों के तेज़ प्रोटोटाइप, अनुसंधान और क्षमता निर्माण के लिए विकसित किया गया है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी में सार्वजनिक सेवाओं को अधिक पारदर्शी, कुशल और जवाबदेह बनाकर भारत में शासन व्यवस्था को परिवर्तन की अपार संभावनाएं हैं।

- इसमें नये उद्योगों को सृजित करने तथा वर्तमान उद्योगों को रूपान्तरित करने की क्षमता है, जैसे नैनो-भुगतान तथा धन पुनर्वितरण को सुविधाजनक बनाना।

- जैसे-जैसे ब्लॉकचेन नेटवर्क बढ़ते हैं, कुशल लेनदेन प्रसंस्करण सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।
- हितधारकों को भारत को ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने और वैश्विक अपनाने के लिए विकसित समाधानों को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखना चाहिए, ताकि आर्थिक विकास, सामाजिक विकास तथा डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सके।

Source: PIB

2030 तक तकनीकी वस्त्र उद्योग 10 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा

सन्दर्भ

- केंद्रीय वस्त्र मंत्री के अनुसार, 2030 तक तकनीकी वस्त्रों का वार्षिक निर्यात 10 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा।

तकनीकी वस्त्र क्या हैं?

- तकनीकी वस्त्रों को ऐसे वस्त्र सामग्री और उत्पादों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिनका उपयोग मुख्य रूप से उनके सौंदर्य या सजावटी विशेषताओं के बजाय उनके तकनीकी प्रदर्शन तथा कार्यात्मक गुणों के लिए किया जाता है।
- वे प्राकृतिक और साथ ही मानव निर्मित रेशों का उपयोग करके निर्मित किए जाते हैं जो उच्च दृढ़ता, उत्कृष्ट इन्सुलेशन, बेहतर थर्मल प्रतिरोध आदि जैसे उन्नत कार्यात्मक गुणों को प्रदर्शित करते हैं।
- **अनुप्रयोग:** ये उत्पाद स्वास्थ्य सेवा, निर्माण, ऑटोमोबाइल, एयरोस्पेस, खेल, रक्षा, कृषि जैसे विभिन्न गैर-पारंपरिक कपड़ा उद्योगों में अंतिम उपयोग के लिए उपयोग किए जाते हैं।
  - इनका उपयोग व्यक्तिगत रूप से विशिष्ट कार्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है, जैसे कि अग्निशामकों की वर्दी के लिए अग्निरोधी कपड़े और शामियाना के रूप में उपयोग किए जाने वाले लेपित कपड़े।
  - किसी अन्य उत्पाद के घटक या भाग के रूप में, उनका उपयोग उस उत्पाद की ताकत, प्रदर्शन या अन्य कार्यात्मक गुणों को बढ़ाने के लिए किया जाता है।
- **महत्व:** तकनीकी वस्त्रों में लागत प्रभावशीलता, स्थायित्व, उच्च शक्ति, हल्का वजन, बहुमुखी प्रतिभा, अनुकूलन, उपयोगकर्ता मित्रता, पर्यावरण मित्रता, संभार-तंत्र सुविधा आदि विशेषताएं हैं।

भारत का तकनीकी वस्त्र क्षेत्र

- भारत के कुल वस्त्र उद्योग में तकनीकी वस्त्रों का योगदान लगभग 13% है।

- तकनीकी वस्त्रों का वैश्विक व्यापार लगभग 300 बिलियन डॉलर है, जबकि भारत का घरेलू बाजार आकार 25 बिलियन डॉलर है और वार्षिक निर्यात 2.6 बिलियन डॉलर का है।
- कपास, लकड़ी, जूट और रेशम जैसे कच्चे माल की उपलब्धता के साथ-साथ दृढ मूल्य श्रृंखला, कम लागत वाला श्रम, बिजली और परिवर्तित उपभोक्ता रुझान इस क्षेत्र में भारत की वृद्धि में योगदान देने वाले कुछ कारक हैं।

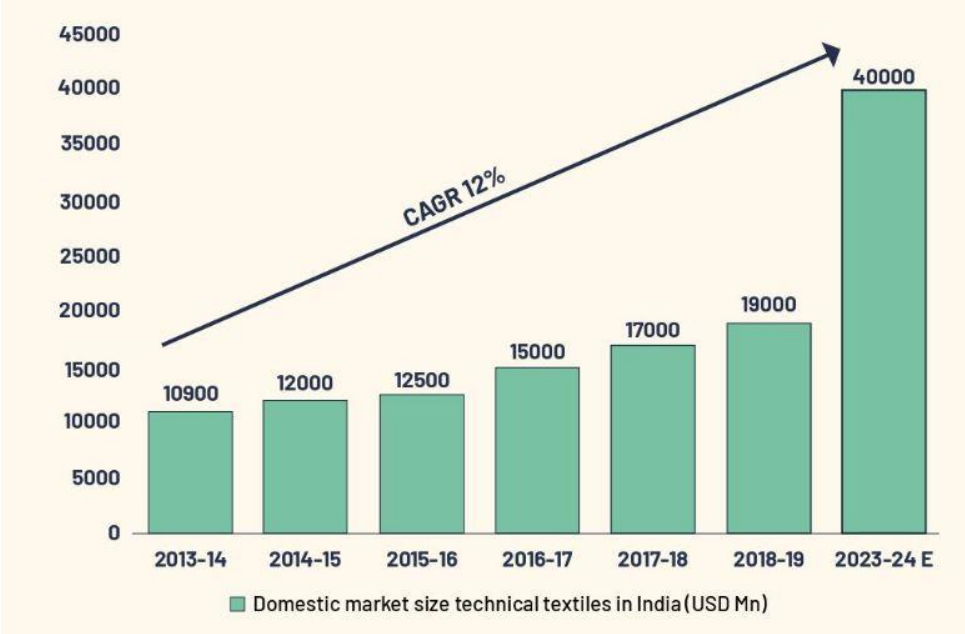

सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (NTTM):** 2020 में लॉन्च किया गया, इसका उद्देश्य उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने, अनुसंधान एवं विकास करने और उद्योग सहयोग को प्रोत्साहित करने जैसी विभिन्न गतिविधियों का समर्थन करके तकनीकी वस्त्रों के लिए एक दृढ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।
- **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना:** वस्त्रों के लिए PLI योजना के अंतर्गत, सरकार तकनीकी वस्त्रों का उत्पादन बढ़ाने और उनकी अधिक बिक्री प्राप्त करने के लिए कंपनियों को प्रोत्साहन देती है।
- **नवाचार और अनुसंधान एवं विकास के लिए समर्थन:** सरकार अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्त पोषण और समर्थन के माध्यम से तकनीकी वस्त्रों में नवाचार को बढ़ावा देती है।
- **टेक्नोटेक्स इंडिया:** यह कपड़ा मंत्रालय द्वारा फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) के सहयोग से आयोजित एक प्रमुख कार्यक्रम है और इसमें वैश्विक तकनीकी वस्त्र मूल्य श्रृंखला के हितधारकों की भागीदारी के साथ प्रदर्शनियां, सम्मेलन और सेमिनार सम्मिलित हैं।

Source: TH

प्लास्टिक प्रदूषण रैंकिंग में भारत शीर्ष पर

संदर्भ

- नेचर जर्नल में प्रकाशित एक नए अध्ययन के अनुसार, भारत ने विश्व में सबसे बड़े प्लास्टिक प्रदूषक के रूप में शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया है, जो वार्षिक 9.3 मिलियन टन (MT) उत्सर्जित करता है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

- अध्ययन में प्लास्टिक उत्सर्जन को ऐसी सामग्री के रूप में परिभाषित किया गया है जो प्रबंधित या कुप्रबंधित प्रणाली (नियंत्रित या नियंत्रित अवस्था) से अप्रबंधित प्रणाली (अनियंत्रित या अनियंत्रित अवस्था - पर्यावरण) में चली गई है।
- भारत से होने वाला प्लास्टिक प्रदूषण वैश्विक प्लास्टिक उत्सर्जन का लगभग पांचवां भाग है।
    - भारत में अपशिष्ट उत्पादन की दर प्रति व्यक्ति प्रति दिन लगभग 0.12 किलोग्राम है।
- 2020 में वैश्विक प्लास्टिक अपशिष्ट उत्सर्जन 52.1 मीट्रिक टन प्रति वर्ष था।
    - जबकि वैश्विक उत्तर में कूड़ा-कचरा सबसे बड़ा उत्सर्जन स्रोत था, वहीं वैश्विक दक्षिण में एकत्रित न किया गया अपशिष्ट प्रमुख स्रोत था।
- दूसरे तथा तीसरे सबसे बड़े प्लास्टिक प्रदूषक नाइजीरिया हैं, जहाँ 3.5 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्सर्जन होता है और इंडोनेशिया, जहाँ 3.4 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्सर्जन होता है।
- इसके अतिरिक्त, उच्च आय वाले देशों में प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन दर अधिक है लेकिन अधिकांश में 100 प्रतिशत संग्रह समायोजन और नियंत्रित निपटान है, जैसा कि अध्ययन में बताया गया है।

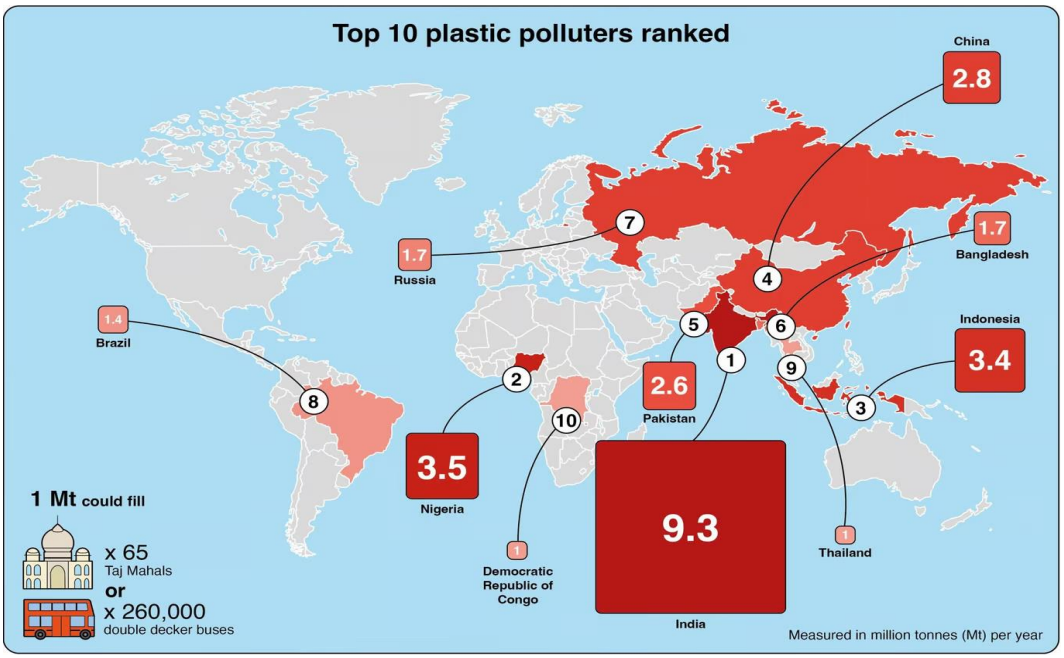

प्लास्टिक प्रदूषण की चिंताएँ

- प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में प्लास्टिक के विघटन की धीमी दर के कारण इसे समाप्त करना मुश्किल है।
- प्लास्टिक माइक्रोप्लास्टिक नामक छोटी इकाइयों में टूट जाता है, जो प्रशांत महासागर की गहराई से लेकर हिमालय की ऊंचाइयों तक पूरे ग्रह में फैल जाता है।
- BPA या बिस्फेनॉल A, वह रसायन जिसका उपयोग प्लास्टिक को सख्त करने के लिए किया जाता है, खाद्य और पेय पदार्थों को दूषित करता है, जिससे यकृत के कार्य, गर्भवती महिलाओं में भ्रूण के विकास, प्रजनन प्रणाली तथा मस्तिष्क के कार्य में परिवर्तन होता है।
- प्लास्टिक, जो एक पेट्रोलियम उत्पाद है, ग्लोबल वार्मिंग में भी योगदान देता है। यदि प्लास्टिक अपशिष्ट को जलाया जाता है, तो यह वातावरण में जहरीला धुआं और कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ता है।
- प्लास्टिक अपशिष्ट पर्यटन स्थलों के सौंदर्य मूल्य को हानि पहुंचाता है, जिससे पर्यटन से संबंधित आय में कमी आती है और स्थलों की सफाई तथा रखरखाव से संबंधित बड़ी आर्थिक लागत आती है।

भारत में प्लास्टिक प्रदूषण के उच्च स्तर के कारण

- **अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन अवसंरचना:** 2019-20 के आंकड़ों से पता चलता है कि देश में कुल प्लास्टिक अपशिष्ट का 50% (34.7 लाख TPA) अप्रयुक्त रह गया, जिससे हवा, पानी और मिट्टी प्रदूषित हो रही है।
- **डेटा अन्तराल:** लोक लेखा समिति ने CAG के 2022 के ऑडिट निष्कर्षों से पाया कि विभिन्न राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों (SPCBs) ने 2016-18 की अवधि के लिए प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन पर डेटा प्रदान नहीं किया और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) द्वारा SPCBs के साथ साझा किए गए डेटा में विसंगतियां थीं।
- **पुनर्चक्रण अक्षमताएँ:** वर्तमान पुनर्चक्रण प्रणालीअधिकांश सीमा तक अनौपचारिक और अनियमित है, जिससे कम गुणवत्ता वाले पुनर्चक्रण किए गए प्लास्टिक और सीमित पर्यावरणीय लाभ मिलते हैं।

प्लास्टिक अपशिष्ट से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास

- **लंदन कन्वेंशन:** अपशिष्ट और अन्य पदार्थों को डंप करके समुद्री प्रदूषण की रोकथाम पर 1972 का कन्वेंशन।
- **स्वच्छ समुद्र अभियान:** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने 2017 में अभियान शुरू किया। यह प्लास्टिक प्रदूषण और समुद्री कूड़े के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सबसे बड़ा वैश्विक अभियान बन गया।

- **बेसल कन्वेंशन:** 2019 में, प्लास्टिक अपशिष्ट को विनियमित सामग्री के रूप में सम्मिलित करने के लिए बेसल कन्वेंशन में संशोधन किया गया था।
    - इस कन्वेंशन में प्लास्टिक अपशिष्ट पर तीन मुख्य प्रविष्टियाँ हैं, जो कि अनुबंध II, VIII और IX में हैं। कन्वेंशन के प्लास्टिक अपशिष्ट संशोधन अब 186 राज्यों पर बाध्यकारी हैं।

प्लास्टिक अपशिष्ट से निपटने में भारत के प्रयास

- **विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR):** भारत सरकार ने EPR लागू किया है, जिसके तहत प्लास्टिक निर्माताओं को अपने उत्पादों से उत्पन्न अपशिष्ट के प्रबंधन और निपटान के लिए जिम्मेदार बनाया गया है।
- **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (संशोधन) नियम, 2022:** यह 120 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक कैरी बैग के निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है।
- **स्वच्छ भारत अभियान:** यह एक राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान है, जिसमें प्लास्टिक अपशिष्ट का संग्रह और निपटान सम्मिलित है।
- **प्लास्टिक पार्क:** भारत ने प्लास्टिक पार्क स्थापित किए हैं, जो प्लास्टिक अपशिष्ट के पुनर्चक्रण और प्रसंस्करण के लिए विशेष औद्योगिक क्षेत्र हैं।
- **समुद्र तट सफाई अभियान:** भारत सरकार और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों ने समुद्र तटों से प्लास्टिक अपशिष्ट को एकत्रित करने और निपटाने के लिए समुद्र तट सफाई अभियान आयोजित किए हैं।

आगे की राह

- प्लास्टिक प्रदूषण की चुनौती से निपटने के लिए व्यवहार में परिवर्तन और प्लास्टिक अपशिष्ट के संग्रह, पृथक्करण और पुनर्चक्रण के लिए संस्थागत प्रणाली को दृढ करने की आवश्यकता है।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा संकल्प 5/14 के तहत, अंतर-सरकारी वार्ता समिति (INC) 2024 के अंत तक कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक प्लास्टिक संधि प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है।

Source: DTE

जल संचय जनभागीदारी पहल

सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री ने वर्षा जल संचयन को बढ़ाने और दीर्घकालिक जल स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए 'जल संचय जन भागीदारी' पहल शुरू की है।

परिचय

- इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्षा जल संचयन को बढ़ाने और दीर्घकालिक जल स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए राज्य भर में लगभग 24,800 वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण किया जा रहा है।

- ‘जल संचय जन भागीदारी’ पहल का उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी और स्वामित्व पर ज़ोर देते हुए जल संरक्षण करना है।
- यह समग्र समाज और समग्र सरकार के दृष्टिकोण से प्रेरित है।

वर्षा जल संचयन

- वर्षा जल संचयन छतों, पार्कों, सड़कों, खुले मैदानों आदि से बहने वाले वर्षा जल का संग्रह और भंडारण है।
- इस बहते पानी को या तो संग्रहीत किया जा सकता है या भूजल में रिचार्ज किया जा सकता है।
- वर्षा जल संचयन प्रणाली में निम्नलिखित घटक होते हैं:
  - जलग्रहण क्षेत्र जहाँ से पानी को एकत्र किया जाता है और संग्रहीत या रिचार्ज किया जाता है,
  - संवहन प्रणाली जो जलग्रहण क्षेत्र से एकत्रित पानी को भंडारण/रिचार्ज क्षेत्र तक ले जाती है,
  - पहला फ्लश जिसका उपयोग पहली बारिश के पानी को बाहर निकालने के लिए किया जाता है,
  - प्रदूषकों को हटाने के लिए उपयोग किया जाने वाला फ़िल्टर,
  - भंडारण टैंक और/या विभिन्न रिचार्ज संरचनाएँ।

महत्व

- **जल संरक्षण:** वर्षा जल एकत्र करने से स्थानीय जल आपूर्ति पर मांग कम हो जाती है, जिससे मीठे जल संसाधनों को संरक्षित करने में सहायता मिल सकती है।
- **तूफ़ानी जल अपवाह में कमी:** वर्षा जल संचयन से अपवाह की मात्रा कम करने में सहायता मिलती है, जिससे मृदा अपरदन कम हो सकता है और बाढ़ का जोखिम कम हो सकता है।
  - इससे स्थानीय जलमार्गों और पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले प्रभाव को भी न्यूनतम करने में सहायता मिलती है।
- **भूजल पुनर्भरण:** कुछ प्रणालियों को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि वर्षा जल को वापस ज़मीन में जाने दिया जाए, जिससे भूजल आपूर्ति को पुनर्भरण करने और जल स्तर को बनाए रखने में सहायता मिलती है।
- **कम बुनियादी ढाँचे पर दबाव:** नगरपालिका जल प्रणालियों पर मांग को कम करके, वर्षा जल संचयन वर्तमान जल बुनियादी ढाँचे पर भार को कम करने में सहायता कर सकता है, जिससे संभावित रूप से महंगे उन्नयन और विस्तार की आवश्यकता में देरी हो सकती है।
- **आपातकालीन आपूर्ति:** सूखे या प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, आवश्यक आवश्यकताओं के लिए जल आपूर्ति बनाए रखने के लिए वर्षा जल का भंडार होना महत्वपूर्ण हो सकता है।

- **स्थिरता:** जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन जल उपलब्धता को प्रभावित करता है, वर्षा जल संचयन वर्षा और जल आपूर्ति में परिवर्तनशीलता के विरुद्ध बफरिंग के लिए एक स्थायी अभ्यास के रूप में तेजी से प्रासंगिक होता जा रहा है।

भारत में जल की कमी से निपटने के लिए सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय जल मिशन (NWM):** NWM का उद्देश्य जल संरक्षण, अपव्यय को न्यूनतम करना तथा विभिन्न क्षेत्रों में जल का समान वितरण सुनिश्चित करना है।
    - यह जल उपयोग दक्षता, भूजल पुनर्भरण और जल संसाधनों के सतत विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- **जल जीवन मिशन (JJM):** 2019 में शुरू किए गए जल जीवन मिशन का उद्देश्य 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पाइप से जलापूर्ति उपलब्ध कराना है।
    - यह मिशन ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित और सतत जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए विकेन्द्रीकृत जल प्रबंधन, सामुदायिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने पर केंद्रित है।
- **अटल भूजल योजना (ABHY):** 2019 में शुरू की गई अटल भूजल योजना का उद्देश्य भूजल प्रबंधन में सुधार करना और पूरे भारत में चिन्हित जल-तनावग्रस्त क्षेत्रों में भूजल के सतत उपयोग को बढ़ावा देना है।
    - यह सामुदायिक भागीदारी, मांग-पक्ष प्रबंधन और भूजल पुनर्भरण उपायों पर केंद्रित है।
- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** इसे 2015-16 में खेतों में पानी की भौतिक पहुंच बढ़ाने और सुनिश्चित सिंचाई के अंतर्गत खेती योग्य क्षेत्र का विस्तार करने, खेत पर पानी के उपयोग की दक्षता में सुधार करने, स्थायी जल संरक्षण प्रथाओं को शुरू करने आदि के लिए शुरू किया गया था।
- **कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (AMRUT):** इसे 2015 में चयनित 500 शहरों में लॉन्च किया गया था और यह जल आपूर्ति, सीवरेज और सेप्टेज प्रबंधन, तूफानी जल निकासी, हरित स्थान तथा पार्क एवं गैर-मोटर चालित शहरी परिवहन के क्षेत्रों में मिशन शहरों में बुनियादी शहरी बुनियादी ढांचे के विकास पर केंद्रित है।
- **नमामि गंगे कार्यक्रम:** 2014 में शुरू किया गया, इसका उद्देश्य प्रदूषण को दूर करके, स्थायी अपशिष्ट जल प्रबंधन को बढ़ावा देकर और नदी बेसिन के पारिस्थितिक स्वास्थ्य को बहाल करके गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों का कायाकल्प करना है।
- **नदियों को जोड़ना (ILR):** राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (NWDA) को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (NPP) के तहत नदियों को जोड़ने का कार्य सौंपा गया है।
    - NPP के दो घटक हैं, अर्थात हिमालयी नदी विकास घटक और प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक।
    - NPP के तहत 30 लिंक परियोजनाओं की पहचान की गई है।

जल संरक्षण के लिए सुझाव

- वर्षा जल संचयन और वाटरशेड प्रबंधन जैसे कुशल जल प्रबंधन प्रथाओं को लागू करने से जल स्रोतों को फिर से भरने में सहायता मिल सकती है।
- जल उपचार प्रणालियों में निवेश और सिंचाई तकनीकों में सुधार से अपव्यय तथा प्रदूषण को कम किया जा सकता है।
- जनता के बीच जल संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाना और जिम्मेदार जल उपयोग को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।
- इसके अतिरिक्त, दीर्घकालिक समाधान के लिए स्थायी जल आवंटन और प्रबंधन को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ आवश्यक हैं।
- IoT, AI और रिमोट सेंसिंग जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके, पानी की खपत को अधिक प्रभावी ढंग से मापा तथा प्रबंधित किया जा सकता है।

Source: PIB

संक्षिप्त समाचार

ला नीना का विलंब

सन्दर्भ

- इस वर्ष सभी प्रमुख वैश्विक एजेंसियां ला नीना के संबंध में अपनी भविष्यवाणियों में काफी हद तक गलत साबित हुईं।

परिचय

- इसके परिणामस्वरूप पूर्वोत्तर मानसून ऋतु (अक्टूबर-दिसंबर) में सामान्य से अधिक वर्षा हो सकती है।
    - इसे शीतकालीन मानसून के नाम से भी जाना जाता है, यह तमिलनाडु, तटीय आंध्र प्रदेश, रायलसीमा, दक्षिणी आंतरिक कर्नाटक और केरल तक सीमित है।

ला नीना

- ला नीना का मतलब स्पेनिश में छोटी लड़की होता है। ला नीना को कभी-कभी एल विएजो, एंटी-एल नीनो या केवल "एक ठंडी घटना" भी कहा जाता है।
- ला नीना एक मौसमी घटना है जो प्रशांत महासागर में होती है। यह एल नीनो का प्रतिरूप है, और दोनों बड़े एल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO) चक्र का भाग हैं।

- व्यापारिक हवाएँ सामान्य से अधिक तेज़ हो जाती हैं, जिससे इंडोनेशियाई तट की ओर अधिक गर्म पानी बहता है, और पूर्वी प्रशांत महासागर सामान्य से अधिक ठंडा हो जाता है।

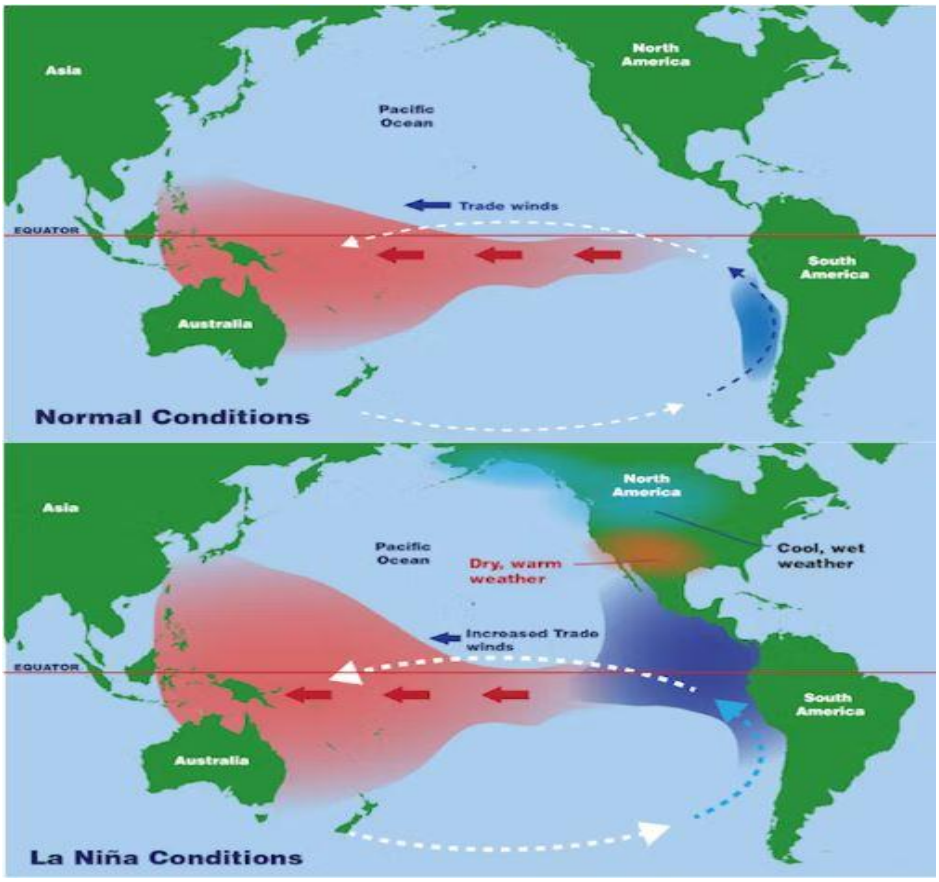

प्रभाव

- **वर्षा में वृद्धि:** दक्षिण-पूर्व एशिया, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिका के कुछ भागों जैसे क्षेत्रों में प्रायः ला नीना घटनाओं के दौरान औसत से अधिक वर्षा होती है।
- **कुछ क्षेत्रों में शुष्क परिस्थितियाँ:** इसके विपरीत, दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका और अफ्रीका के कुछ भागों जैसे क्षेत्रों में औसत से कम वर्षा होती है, जिससे सूखे की स्थिति उत्पन्न होती है।
- **अधिक शक्तिशाली अटलांटिक तूफान:** ला नीना अटलांटिक में हवा के झोंकों को कम करता है, जिससे ऐसी परिस्थितियाँ बनती हैं जो तूफानों के विकास के लिए अधिक अनुकूल होती हैं।
- **ठंडा तापमान:** कुछ क्षेत्रों में सामान्य से अधिक ठंडा तापमान होता है, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रशांत उत्तर-पश्चिम और दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्सों में।

Source: IE

कोन्याक जनजाति

समाचार में

- नागालैंड में कोन्याक समुदाय की शीर्ष संस्था कोन्याक यूनियन ने हाल ही में गूगल मानचित्र पर दिखाई गई सीमा रेखा के संबंध में चिंता व्यक्त की है, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह कोन्याक जनजाति के पारंपरिक क्षेत्र को गलत तरीके से दर्शाती है।

कोन्याक जनजाति के बारे में

- वे मंगोलॉयड जाति से संबंधित हैं और वे नागालैंड की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक हैं।
- ऐतिहासिक रूप से, कोन्याक जनजाति अपने सिर काटने की प्रथा के लिए जानी जाती थी, जो युद्ध और सम्मान से जुड़ी एक सांस्कृतिक रस्म है।
- ईसाई धर्म के आगमन से पहले, जो तब से कोन्याकों के बीच प्रमुख धर्म बन गया है, वे एनिमिज्म का पालन करते थे, एक विश्वास प्रणाली जिसके अंतर्गत वे पेड़ों, नदियों और जानवरों सहित प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा करते हैं।
- कोन्याकों का समाज पितृसत्तात्मक है।

Source: TH

बहुऔषधि प्रतिरोधी क्षय रोग के लिए BPaLM उपचार

समाचार में

- केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बहुऔषधि प्रतिरोधी क्षय रोग (MDR-TB) के लिए BPaLM उपचार शुरू करने को मंजूरी दे दी है।

BPaLM उपचार के बारे में

- BPaLM उपचार पद्धति में चार दवाओं का संयोजन सम्मिलित है - बेडाक्विलाइन, प्रीटोमैनिड, लाइनज़ोलिड और मोक्सीफ्लोक्सासिन।
    - प्रीटोमानिड को पहले ही केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) द्वारा भारत में उपयोग के लिए अनुमोदित और लाइसेंस दिया जा चुका है।
- यह बहुऔषधि प्रतिरोधी क्षय रोग (MDR-TB) के लिए एक नवीन उपचार है जिसे राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP) के अंतर्गत अनुमोदित किया गया था।

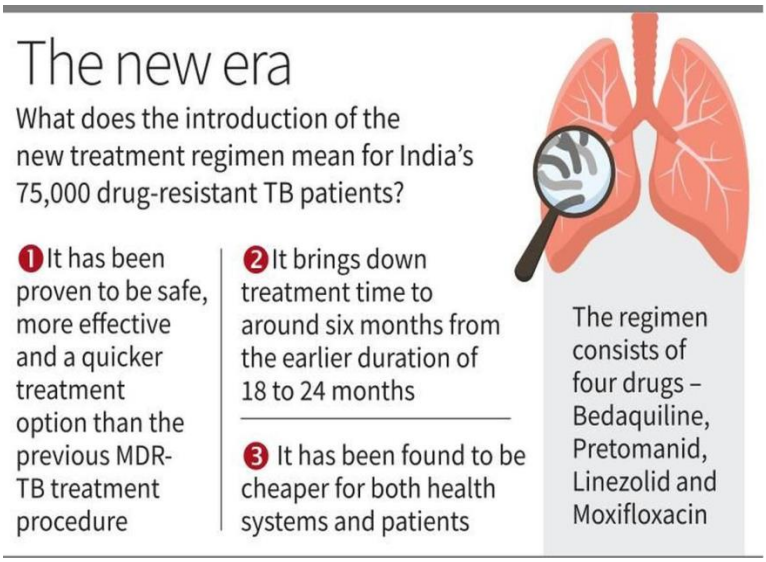

लाभ:

- यह पारंपरिक 20 महीनों की तुलना में उपचार की अवधि को छह महीने तक कम कर देता है।
- यह उच्च उपचार सफलता दर के साथ अधिक सुरक्षित और प्रभावी साबित हुआ है।
- यह समग्र बचत प्रदान करता है और रोगियों पर भार कम करता है।

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP):

- इसे पहले संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (RNTCP) के नाम से जाना जाता था, जिसे 2020 में नाम दिया गया।
- इसका उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों से पाँच वर्ष पहले 2025 तक टीबी के भार को रणनीतिक रूप से कम करना और उन्मूलन प्राप्त करना है।
- यह निजी प्रदाताओं और उच्च जोखिम वाली जनसँख्या सहित सभी टीबी मामलों का पता लगाने पर बल देता है।

अन्य संबंधित पहल:

- **प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान (PMTBMBA):** टीबी उन्मूलन की दिशा में सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए 2022 में राष्ट्रपति द्वारा शुरू किया गया।
- **निक्षय मित्र:** टीबी रोगियों को अतिरिक्त नैदानिक, पोषण और व्यावसायिक सहायता प्रदान करता है।
- **प्रयोगशाला नेटवर्क:** भारत में MDR-TB का पता लगाने और उपचार में सहायता के लिए 7,767 तीव्र आणविक परीक्षण सुविधाएँ तथा 87 संस्कृति और दवा संवेदनशीलता परीक्षण प्रयोगशालाएँ हैं।

Source: TH

FAO खाद्य मूल्य सूचकांक (FFPI)

समाचार में

- हाल ही में, विश्व खाद्य वस्तुओं की कीमतों के बेंचमार्क, एफएओ खाद्य मूल्य सूचकांक (FFPI) में अगस्त 2024 में मामूली गिरावट दर्ज की गई।

FAO खाद्य मूल्य सूचकांक के बारे में(FFPI)

- FAO खाद्य मूल्य सूचकांक को 1996 में खाद्य और कृषि संगठन (FAO) द्वारा वैश्विक कृषि वस्तु बाजारों में विकास की निगरानी के लिए एक सार्वजनिक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया था।
- यह वैश्विक खाद्य वस्तु बाजार के लिए बैरोमीटर के रूप में कार्य करता है प्रमुख खाद्य वस्तुओं के मूल्य में उतार-चढ़ाव को ट्रैक करता है और संभावित खाद्य सुरक्षा चुनौतियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- यह सूचकांक खाद्य वस्तुओं की एक टोकरी की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में मासिक परिवर्तनों का एक उपाय है।
- इसमें पाँच वस्तु समूह मूल्य सूचकांकों का भारित औसत सम्मिलित है, जिसका भार 2014-2016 की अवधि में प्रत्येक समूह के औसत निर्यात शेयरों पर आधारित है। FFPI के घटक: मांस, डेयरी उत्पाद, अनाज, वनस्पति तेल, चीनी आदि

Source: TH

विज़ियोएनएक्सटी(VisioNxt)

समाचार में

- केंद्रीय कपड़ा मंत्री ने भारत की पहली फैशन पूर्वानुमान पहल 'विज़ियोएनएक्सटी' का शुभारंभ किया

विज़ियोएनएक्सटी के बारे में

- इसे अनुसंधान एवं विकास योजना के अंतर्गत भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित किया जाता है।
    - राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT) से संबद्ध, इसके 18 परिसरों, आंतरिक विशेषज्ञता और व्यापक पूर्व छात्र नेटवर्क का लाभ उठाते हुए।
- यह भारत की पहली पहल है जो फैशन प्रवृत्ति की जानकारी और पूर्वानुमान उत्पन्न करने के लिए AI और EI को जोड़ती है।

- **मिशन:** इसका मिशन भौगोलिक-विशिष्ट रुझानों की पहचान करना, उनका मानचित्रण करना और उनका विश्लेषण करना है, जो भारत की सकारात्मक बहुलता, सांस्कृतिक विविधता तथा सामाजिक-आर्थिक बारीकियों को दर्शाते हैं, साथ ही व्यापक रुझानों एवं अंतर्दृष्टि को एकत्रित करते हैं।
    - इसने 'डीप विजन' विकसित किया, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) को मिलाकर एक स्वदेशी प्रवृत्ति पूर्वानुमान प्रणाली है।
- **महत्व:** यह वैश्विक पूर्वानुमान एजेंसियों पर निर्भरता कम करता है, भारतीय फैशन उपभोक्ताओं के बारे में अद्वितीय जानकारी प्रदान करता है, वस्त्रों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी में भारत की ताकत को एकीकृत करता है और कृत्रिम तथा मानव बुद्धिमत्ता को जोड़ता है
    - स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देकर और भारतीय संस्कृति तथा डिजाइन का प्रदर्शन करके फैशन उद्योग में भारत की वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाना।

Source: PIB

प्रकाश प्रदूषण से जुड़ा है अल्ज़ाइमर का जोखिम

सन्दर्भ

- शोधकर्ताओं ने पाया है कि रात में प्रकाश प्रदूषण के अत्यधिक संपर्क से अल्जाइमर रोग विकसित होने के जोखिम में वृद्धि हो सकती है।

परिचय

- प्रकाश प्रदूषण, प्राकृतिक रूप से होने वाले बाहरी प्रकाश के स्तर में मानव निर्मित परिवर्तन है। शोध में पाया गया कि 65 वर्ष से कम आयु के लोगों में, प्रकाश प्रदूषण का अध्ययन किए गए किसी भी अन्य जोखिम कारक की तुलना में अल्जाइमर रोग के प्रसार से अधिक मजबूत संबंध था।

अल्ज़ाइमर रोग

- अल्जाइमर डिमेंशिया का सबसे सामान्य प्रकार है, जो संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली की हानि से जुड़ी कई स्थितियों के लिए एक व्यापक शब्द है।
- **कारण:** इसमें मस्तिष्क में पट्टिकाओं और उलझनों का निर्माण तथा स्मृति के भंडारण एवं प्रसंस्करण से संबंधित कुछ न्यूरॉन्स की त्वरित उम्र बढ़ने शामिल है।
- शुरुआती लक्षणों में भूलने की बीमारी सम्मिलित है और जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है, रोगी अधिक भ्रमित हो जाते हैं, परिचित स्थानों पर अपना रास्ता भूल जाते हैं, और सरल कार्यों की योजना बनाने तथा उन्हें पूरा करने में कठिनाई होती है।

- **व्यापकता:** WHO के अनुसार विश्व भर में 55 मिलियन से अधिक लोग डिमेंशिया से पीड़ित हैं, जिनमें से लगभग 75% मामलों में अल्जाइमर का योगदान है।
    - ऐसा माना जाता है कि 3 से 9 मिलियन भारतीय इस बीमारी से पीड़ित हैं और भारत की जनसंख्या बढ़ने के साथ इस संख्या में वृद्धि होगी ।

Source: TH

MSCI उभरते बाजार निवेश योग्य बाजार सूचकांक (EM IMI)

सन्दर्भ

- भारत MSCI उभरते बाजार निवेश योग्य बाजार सूचकांक (EM IMI) में चीन को पीछे छोड़कर सबसे बड़ा भार वाला देश बन गया है, जहां भारत का भार 22.27 प्रतिशत था, जबकि चीन का 21.58 प्रतिशत था।

MSCI उभरते बाजार निवेश योग्य बाजार सूचकांक(EM IMI)

- यह एक व्यापक सूचकांक है जिसमें 24 उभरते बाजार देशों के बड़े, मध्यम और छोटे-कैप स्टॉक सम्मिलित हैं।
- MSCI IMI में वर्तमान में 3,355 स्टॉक सम्मिलित हैं और सूचकांक सामान्यतः सम्मिलित प्रत्येक देश में फ्री फ्लोट-समायोजित बाजार पूंजीकरण का लगभग 85% प्रतिनिधित्व करता है।

इक्विटी बाजारों में भारत का मजबूत प्रदर्शन

- इस अनुकूल प्रवृत्ति में विभिन्न प्रमुख कारकों ने योगदान दिया है;
    - भारतीय अर्थव्यवस्था के दृढ मैक्रोइकॉनोमिक फंडामेंटल और भारतीय निगमों का प्रभावशाली प्रदर्शन,
    - 2024 के शुरुआती महीनों के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में 47% की वृद्धि,
    - ब्रेंट क्रूड की कीमतों में गिरावट और भारतीय ऋण बाजारों में पर्याप्त विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI)।

Source: BL

शनि के भव्य वलय

सन्दर्भ

- वर्ष 2025 में, शनि के प्रतिष्ठित वलय ग्रह के अक्षीय झुकाव के कारण उत्पन्न प्रकाशीय भ्रम के कारण कुछ समय के लिए दृश्य से "गायब" हो जाएंगे।

एक ऑप्टिकल भ्रम

- सौरमंडल में सूर्य से छठा ग्रह शनि 26.73 डिग्री के कोण पर झुका हुआ है और सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने में लगभग 29.4 पृथ्वी वर्ष लेता है।
- इसका अर्थ है कि शनि वर्ष के आधे भाग (लगभग 15 वर्ष) के लिए, गैस विशाल ग्रह सूर्य की ओर झुका हुआ होता है और शेष आधे भाग के लिए यह सूर्य से दूर झुका हुआ होता है।
- इसके छल्ले भी उसी कोण पर झुके हुए हैं और जैसे-जैसे ग्रह घूमता है, पृथ्वी से देखने पर वे अपना अभिविन्यास बदलते दिखाई देते हैं।
- प्रत्येक 13 से 15 वर्ष में, शनि के वलय का किनारा पृथ्वी के साथ सीधा जुड़ जाता है। मार्च 2025 में ऐसा ही होगा जब हमारे ग्रह से केवल वलय के किनारे ही दिखाई देंगे।
    - शनि के वलय अपनी चौड़ाई के सापेक्ष अविश्वसनीय रूप से पतले हैं, जो केवल 30 फीट मोटे हैं। वे लगभग पूरी तरह से पानी की बर्फ से बने हैं।

वलय वाले अन्य ग्रह

- **बृहस्पति:** इसमें धुंधले वलय हैं जो अधिकतर धूल के कणों से बने हैं।
- **यूरेनस:** इसमें चट्टानी पदार्थ के गहरे, संकीर्ण वलयों से बनी एक जटिल वलय प्रणाली है।

Source: IE

अभ्यास वरुण

सन्दर्भ

- भारतीय और फ्रांसीसी नौसेनाओं ने भूमध्य सागर में द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास 'वरुण' का 22वां संस्करण आयोजित किया।

परिचय

- 2001 में शुरू हुआ द्विपक्षीय अभ्यास वरुण पिछले कुछ वर्षों में काफी विकसित हुआ है और वर्तमान संस्करण के दौरान विभिन्न उन्नत नौसैनिक ऑपरेशन आयोजित किए गए।
- भूमध्य सागर में 'वरुण' का आयोजन भारत और फ्रांस के मध्य समुद्री क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण माइलस्टोन है, जो भारतीय नौसेना की हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) से दूर निरंतर संचालन के प्रति प्रतिबद्धता तथा पहुंच को दर्शाता है।

Source: PIB

फ्रीनाराचने डेसिपिएन्स

समाचार में

- असम में हाल ही में मकड़ी की एक प्रजाति, फ्रीनाराचने डेसिपिएन्स, जिसे पक्षी-गोबर केकड़ा मकड़ी के रूप में जाना जाता है, की खोज की गई है।

परिचय

- पहले मलेशिया, जावा और सुमात्रा में पाया जाता था।
- इसे बर्ड डंग या बर्ड-ड्रॉपिंग क्रैब स्पाइडर के नाम से जाना जाता है।
- यह अपने मोटे शुक्राणुओं द्वारा पहचाना जाता है, जो मादा प्रजनन पथ में एक थैली जैसा अंग होता है जो संभोग के बाद शुक्राणु को संग्रहीत करता है।
- इस प्रजाति में, शुक्राणुओं के पीछे के सिर लगभग छूते हुए होते हैं, जो एक प्रमुख पहचान विशेषता है।

Source: TH

■■■■